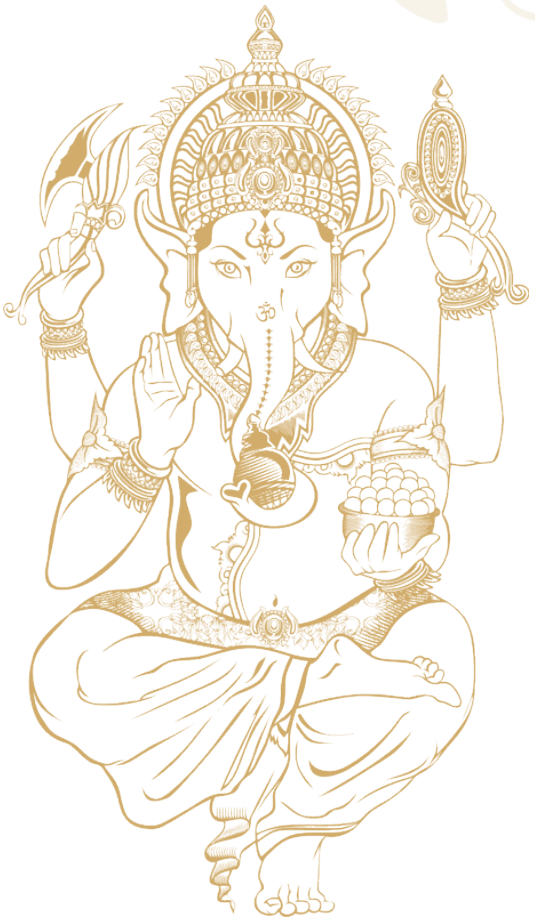

aa

31 Jan 2026

10:55 AM

Una

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121120001**

तिथि 31/01/2026 **समय** 10:55:00 **वार** शनिवार **स्थान** Una **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:24
अक्षांश 31:28:00 उत्तर **रेखांश** 76:19:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:24:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	19:12:04 घं
वेलान्तर	00:13:24 घं
सूर्योदय	07:18:24 घं
सूर्यास्त	17:58:18 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	माघ
पक्ष	शुक्ल
तिथि	14
नक्षत्र	पुनर्वसु
योग	विष्कुम्भ
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मार्जार
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	को-कोमल
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

गुरु 10वर्ष 7मा 0दि

गुरु

31/01/2026
01/09/2036

	00/00/0000
	31/01/2026
बुध	08/08/2027
केतु	14/07/2028
शुक्र	15/03/2031
सूर्य	01/01/2032
चन्द्र	02/05/2033
मंगल	08/04/2034
राहु	01/09/2036

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 3मा 26दि

पिंगला

31/01/2026
29/05/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	31/01/2026
भद्रिका	09/03/2026
उल्का	09/07/2026
सिद्धा	28/11/2026
संकटा	09/05/2027
मंगला	29/05/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:57:53	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			17:06:56	मक	श्रवण	3	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	1.66	पुत्र	पितृ	वध
चंद्र			24:30:49	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	मित्र राशि	1.02	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	11:53:55	मक	श्रवण	1	चंद्र	राहु	उच्च राशि	1.04	ज्ञाति	भ्रातृ	वध
बुध		अ	23:53:04	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	मंगल	सम राशि	0.95	अमात्य	ज्ञाति	मित्र
गुरु	व		23:13:27	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.39	भ्रातृ	धन	जन्म
शुक्र		अ	22:58:58	मक	श्रवण	4	चंद्र	सूर्य	मित्र राशि	1.30	मातृ	कलत्र	वध
शनि			04:20:29	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	0.95	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		14:56:49	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		14:56:49	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

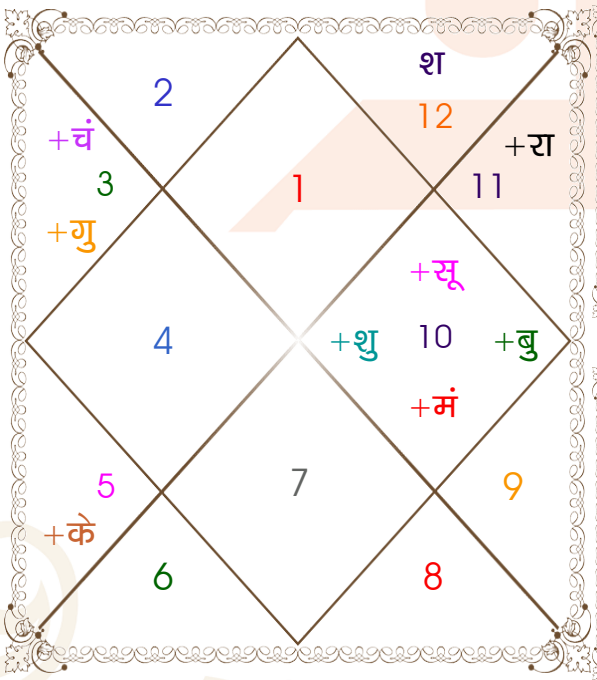

चन्द्र कुंडली

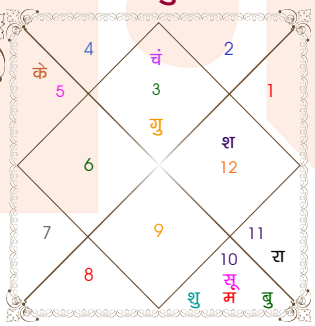

नवमांश कुंडली

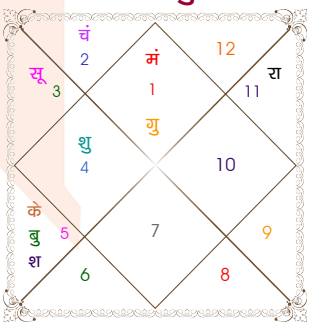

सर्वाष्टकवर्ग

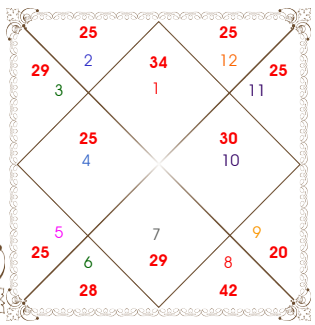

दशमांश कुंडली

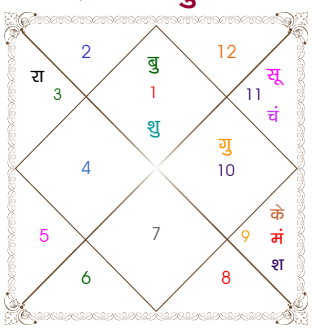

नक्षत्रफल

आप पुनर्वसु नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, योनि मार्जार, देव गण तथा आद्य नाड़ी होगी नक्षत्र के चरणानुसार आप के जन्म नाम का प्रारम्भ "को" अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से ही शान्त प्रकृति के होंगे। किसी भी प्रकार के संकट काल से आप घबरायेंगे नहीं अपितु शान्ति पूर्वक उस समस्या का निदान सोचेंगे। आप आजीवन सांसारिक तथा भौतिक सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल होंगे। शारीरिक दृष्टि से आपका गौरवर्ण रहेगा तथा देखने में आप सुन्दर लगेंगे। सौभाग्य से आप हमेशा युक्त रहेंगे। आप अपने समाज में अपनी परोपकारी प्रकृति तथा सेवाभाव के द्वारा लोकप्रियता को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप हमेशा पुत्र तथा मित्रों से भी परिपूर्ण रहेंगे।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न जातक, शान्त सुखी, भोगी, सुन्दर, लोकप्रिय तथा पुत्र एवं मित्रों से युक्त होता है।

आप अच्छे स्वभाव तथा उत्तम आचरण वाले होंगे। परन्तु कभी कभी आपकी बुद्धि भी दुष्टता की ओर प्रवृत होगी। आप हमेशा अन्य जनों के मध्य अपने को तृषातुर या अतृप्त सा अनुभव करेंगे जिससे आप के अन्दर व्याकुलता का अभिवर्द्धन होगा। परन्तु आप सन्तोषी स्वभाव के भी होंगे तथा किसी भी वस्तु की थोड़ी सी प्राप्ति में ही पूर्ण रूप से सन्तुष्टि का अनुभव करेंगे।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक क्लेश की स्थिति में भी सहनशील, सुखी, सुशील, दुष्टबुद्धिवाला, तृषाकुल तथा थोड़े से ही सन्तुष्ट होने वाला होता है।

अत्यन्त गूढ़ से गूढ़ विषयों का आपको आत्मज्ञान रहेगा तथा ऐश्वर्य का आपके पास कभी भी अभाव नहीं रहेगा तथा इसी के बल पर आप समाज में यश तथा प्रतिष्ठा को प्राप्त करेंगे। लेखन प्रतिभा से आप युक्त रहेंगे तथा आप में कामभावना की अधिकता रहेगी।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

अर्थात पुनर्वसु में उत्पन्न जातक गूढात्मा, धन तथा बल से विख्यात, कवि तथा कामुक प्रकृति का होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा समाज में बहुत से मित्र होंगे। साहित्य तथा शास्त्रों के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए आप सदैव प्रयत्नशील तथा अभ्यासरत रहेंगे। आप स्वर्ण एवं रत्नादि से निर्मित आभूषणों के भी स्वामी होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति से भी सुशोभित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य कीमती पदार्थो तथा भूमि इत्यादि के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक अधिक मित्रों वाला, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, रत्नस्वर्णादि आभूषणों से परिपूर्ण, दान, द्रव्य एवं भूमि से युक्त होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप की आखें अल्प लालिमा से युक्त श्यामवर्ण की होंगी एवं सिर के बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सभी अंग कोमल पुष्ट या सुडौलता को प्राप्त होंगे तथा नासिका भी ऊंची होगी। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के ज्ञान को प्राप्त करने की आपके मन में रूचि होगी फलतः आप इनके अध्ययन में परिश्रम करेंगे। सन्देशों के आदान प्रदान के कार्यों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा बुद्धि की इसी तीव्रता के कारण आप अन्य जनों की हृदय स्थित बातों को जान लेने में सफलता प्राप्त करेंगे। समाज के लोगों से आपको विनयशील सद्व्यवहार के द्वारा प्रशंसा प्राप्त होगी। आप अत्यन्त मधुर एवं मृदुवाणी बोलेंगे जिससे श्रोताओं के मन को प्रसन्नता प्राप्त होगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य में आप कुशल होगी तथा आजीवन इसका अनुपालन करेंगे। संगीत तथा नृत्य से आपका स्वाभाविक लगाव रहेगा तथा इनके विषय में भी आपको प्रचुर ज्ञान रहेगा।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।

दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रुचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।

बृहज्जातकम्

आपके शरीर का कद ऊंचा तथा नसें शरीर से बाहर दिखाई देंगी तथा आपकी हथेली में मछली के आकार का चिन्ह भी हो सकता हैं। आप देखने में सुन्दर तथा दर्शनीय होंगे। काव्य लेखन की प्रतिभा से आप युक्त रहेंगे तथा अच्छे साहित्य सृजन में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आप आजीवन समस्त सुखों का उपभोग करते हुए प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करेंगे। परन्तु आप विषय वासनाओं के प्रति अधिक आकर्षित रहेंगे । साथ ही कामेच्छा का भी आप में बाहुल्य रहेगा। आप स्त्री से हमेशा हारे हुए रहेंगे तथा पूर्ण रूप से उसके वश में रहेंगे। साथ ही सौभाग्य भी हमेशा आप का भविष्य उज्जवल करेगा।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।

सारावली

आपकी आयु पूर्णायु होगी तथा दीर्घकाल तक आप जीवित रहेंगे तथा जीवन भर हास्य प्रियता की प्रवृति से युक्त रहेंगे। आपकी इधर उधर घूमने या यात्रादि करने में भी रूचि रहेंगी तथा घर में रहकर भी से सन्तुष्टि तथा आनन्द की प्राप्ति करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।

जातकपरिजातः

समाज के विभिन्न वर्गो में आप मान सम्मान के अधिकारी होंगे तथा सब के मध्य खूब लोक प्रिय रहेंगे। आप स्त्रियों के प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनके प्रति आपका अत्याधिक आकर्षण रहेगा। साथ ही अपनी योग्यता तथा बुद्धिमानी से आप समाज में यश तथा गौरव को भी प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।

जातकाभरणम्

आप अपने भाषणों तथा लेखो में श्लिष्टयुक्त स्पष्ट वाक्यों का अधिक संख्या में प्रयोग करेंगे तथा स्वजनों एवं अन्य सामाजिक प्राणियों की भलाई के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। आप श्रेष्ठाचरण से सुशोभित रहेंगे तथा कफपित्त प्रकृति से भी युक्त रहेंगे।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।

प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी आखों में हमेशा चंचलता का भाव रहेगा । नृत्य एवं संगीत से आपका आत्मिक लगाव रहेगा तथा अपने धन ऐश्वर्य तथा अन्य कार्यों से आपकी कीर्ति भी व्याप्त रहेगी। भाषण देने की कला में भी आप अत्यन्त निपुण होंगे तथा दृढ़निश्चयी भी होंगे। किसी बात को एक बार सोच कर उसे पूरा करके ही छोड़ना आपकी प्रवृति होगी। इसके साथ ही आप न्यायवादी भी होंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आपका जन्म देवगण में हुआ हैं। अतः आप उत्तम मधुर तथा प्रियवाणी से युक्त होंगे। आपकी प्रियवाणी से सभी लोग आपसे आकर्षित रहेंगे। आप अत्यन्त सरल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से अपने विचार व्यक्त करने की क्षमता से पूर्ण होगे तथा उतनी ही सादगी से अन्यों के विचार भी ग्रहण करने में समर्थ होंगे। आप शाकाहारी भोजन करना पसन्द करेंगे। गुणों के विषय में आपको विषद जानकारी होगी तथा स्वयं भी विद्वानों द्वारा वर्णित श्रेष्ठ गुणों से युक्त रहेंगे। धन, वैभव की आपके पास आजीवन कमी नहीं रहेगी।

आप सुन्दर तथा स्वस्थ शरीर से युक्त रहेंगे। आपकी प्रवृति स्वभाव से ही दानशील होगी तथा अवसरानुकूल आप इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे जिससे समाज में मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। आप दिखावे तथा ढोंग की हमेशा उपेक्षा करेंगे तथा सादा जीवन व्यतीत करने में विश्वास करेंगे। साथ ही आप एक उच्चकोटि के ज्ञानी भी हो सकते हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आपका जन्म मार्जार योनि में हुआ हैं। अतः आप में वीरता के गुण नैसगिक रूप से विद्यमान रहेंगे। अपने समस्त कार्यों को आप चतुराई से सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपको मीठा भोजन तथा मीठा पेय भी अत्यन्तानन्दानुभूति करायेगा। आप निर्भय होंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके मन मस्तिष्क में नहीं रहेगा। परन्तु यदा कदा आपके स्वभाव में

दुष्टता भी परिलक्षित होगी तथा आप दुष्कर्मो को करने को भी तैयार हो जाएंगे।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघ योग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदाता हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, 2,7,12 तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि का योग बनता है। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय पर आपको शारीरिक सुरक्षा तथा स्वस्थता का भी ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो। मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल श्री गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के व्रत भी करने चाहिए। साथ ही हरित वस्त्र, पन्ना, मिश्री तथा कपूर आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलो में वृद्धि होगी। साथ ही पूर्ण रूप से मानसिक शान्ति भी प्राप्त होगी। इसके साथ ही बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।